आनन्द कुमार त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर (इतिहास)
रोहतास महिला कालेज, सासाराम

बी० ए० (प्रतिष्ठा-इतिहास) द्वितीय वर्ष
प्रश्नपत्र - IV

'मनसबदारी प्रथा'

अरबी भाषा के शब्द मनसब का अर्थ है - 'पद'। मनसबदारी व्यवस्था की प्रथा खलीफा अब्बा सईद द्वारा आरम्भ की गई तथा चंगेज खाँ तथा तैमूर ने विकास किया। इस प्रकार अकबर ने मनसबदारी की प्रेरणा मध्य एशिया से ग्रहण की। मुगलकालीन सैन्य व्यवस्था पूर्णतः मनसबदारी की प्रेरणा ~~के मध्य~~ पर आधारित थी। अकबर द्वारा आरम्भ की गयी इस व्यवस्था से उन व्यक्तियों को सम्राट द्वारा एक पद प्रदान किया जाता था, जो शाही सेना में होते थे। दिये जाने वाले पद को 'मनसब' एवं ग्रहण करने वाले को 'मनसबदार' कहा जाता था। मनसब प्राप्त करने के उपरान्त उस व्यक्ति को शाही दरबार में प्रतिष्ठा, स्थान व वेतन का ज्ञान होता था। सम्भवतः अकबर की मनसबदारी व्यवस्था मंगोल नेता चंगेज खाँ की 'दशमलव प्रणाली' पर आधारित थी।

'पद' या श्रेणी के अर्थ वाले मनसब शब्द का प्रथम उल्लेख अकबर के शासन के 11वें वर्ष में मिलता है, परन्तु मनसब के जारी होने का उल्लेख 1567 ई० से मिलता है। मनसबदार के पद के साथ 1594-95 ई० से 'सवार' का पद भी जुड़ने लगा। इस तरह अकबर के शासनकाल में मनसबदारी प्रथा कई चरणों से गुजर कर उत्कर्ष पर पहुँची।

अकबर के शासनकाल में प्रत्येक उच्च पदाधिकारी केवल काजी एवं सद्र को छोड़कर सेना में पदासीन होता था। युद्ध के समय आवश्यकता पड़ने पर उसे सैन्य संचालन भी करना पड़ता था।

Scanned with CamScanner

इन सबको मनसब प्राप्त होता था। परन्तु सैन्य विभाग से अलग अन्य विभागों में कार्यरत इन पदाधिकारियों को 'मनसबदार' के स्थान पर 'रोजिनदार' कहा जाता था। अकबर के समय में सबसे छोटा मनसब दस एवं सबसे बड़ा मनसब 10,000 का होता था। परन्तु कालान्तर में यह बढ़कर 12000 हो गया। शाही परिवार के शहजादों को 5000 से ऊपर का मनसब मिलता था। मनसब प्राप्त करने वाले मुख्यतः तीन वर्गों में विभक्त थे - 10 से 500 तक मनसब प्राप्त करने वाले मनसबदार कहलाते थे, 500 से 2500 तक मनसब प्राप्त करने वाले 'उमरा' कहलाते थे एवं 2500 से ऊपर मनसब प्राप्त करने वाले व्यक्ति 'अमीर-ए-उम्दा' या 'अमीर-ए-आजम' कहलाते थे।

जात से व्यक्ति के वेतन व प्रतिष्ठा का ज्ञान होता था। 'सवार' पद से घुड़सवार दस्तों की संख्या का ज्ञान होता था। 1595 ई० में जात पद के साथ सवार पद को जोड़ देने से जात-ओ-सवार पद तीन श्रेणियों में बंट गया। प्रथम श्रेणी के मनसबदार को अपने जात के बराबर ही घुड़सवार सैनिक की व्यवस्था करनी पड़ती थी, जैसे 5000/5000 जात/सवार। द्वितीय श्रेणी के मनसबदार को अपने जात पद से आधे से कम घुड़सवार सैनिक की व्यवस्था करनी होती थी। जैसे 5000/2000 जात/सवार।

'आइन-ए-अकबरी' में 66 मनसबों का उल्लेख किया गया है, किन्तु व्यवहार में 33 मनसब ही प्रदान किए जाते थे।

Scanned with CamScanner